E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.675

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2023 Volume 04 Issue III

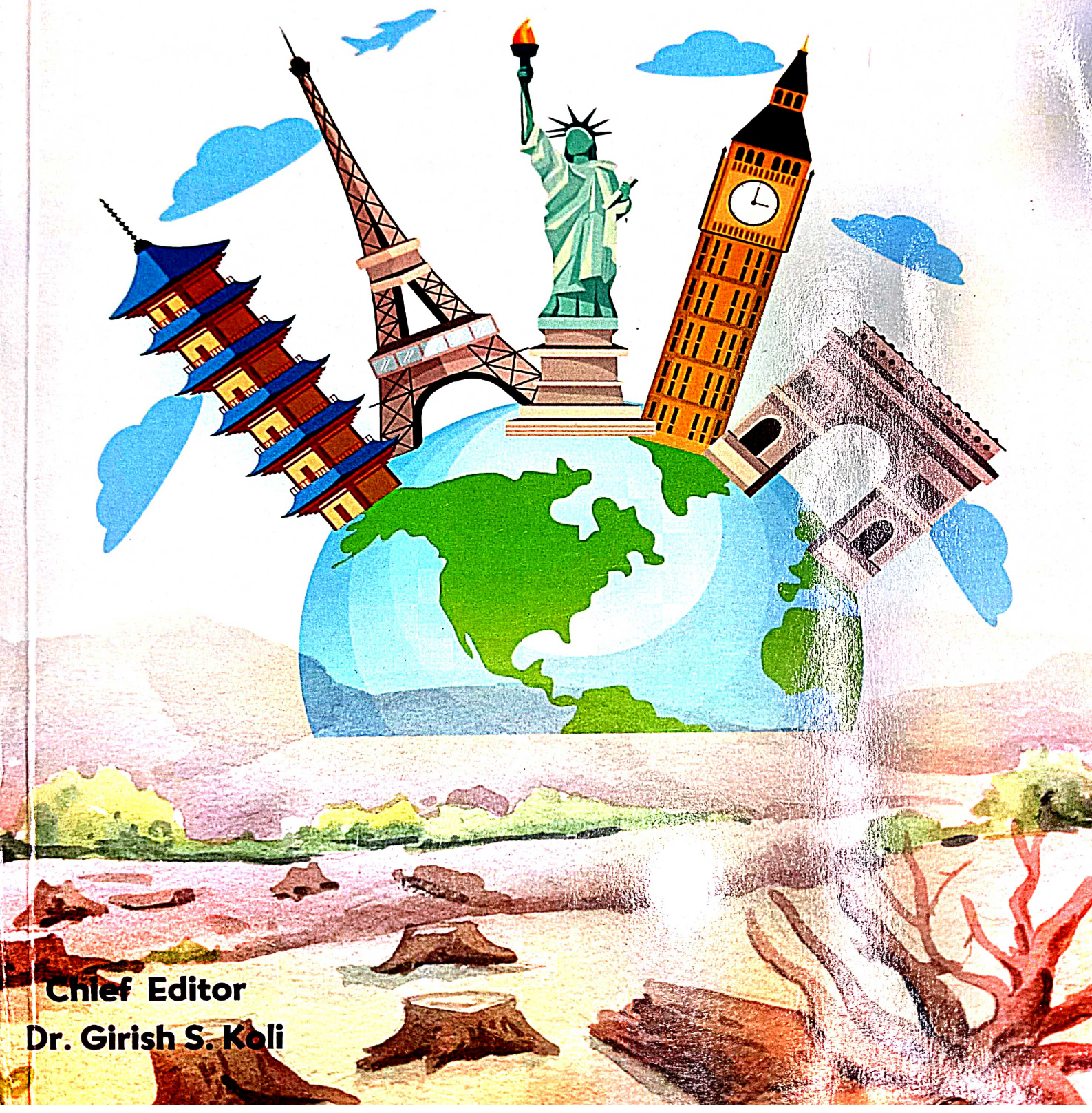

Chief Editor
Dr. Girish S. Koli

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2023 Volume 04 Issue III SJIF Impact- 5.67

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2023

Volume 04 Issue III

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.67

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF)

ISRA JIF

Digital Online Identifier-Database System

Akshara Publication

Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2023 Volume 04 Issue III

SJIF Impact- 5.67

Editorial Board

-: Chief & Executive Editor:-

Dr. Girish Shalik Koli

Dongar Kathora

Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301

Mobile No: 09421682612

Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

-:Co-Editors :-

- **Dr. Sirojiddin Nurmatov,** Associate Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- **Dr.Vivek Mani Tripathi,** *Assistant Professor*, Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- **Dr.Maxim Demchenko** Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute Of International Relationships, Moscow,Russia
- **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan,** Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- **Dr. Vijay Eknath Sonje,** *Assistant Professor* (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- **Mr. Nilesh SamadhanGuruchal,** *Assistant Professor* (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- **Dr. Shaikh Aafaq Anjum,** *Assistant Professor* (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- **Mr. Dipak Santosh Pawar,** *Assistant Professor* (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

PEER REVIEW POLICY

AMRJ will send a copy of research work to the editorial board. The board will verify the same according to the rules of research methodology. Then plagiarism in the work will be checked. In case if the research methodology is not followed properly by the researcher, message will be given to the researcher and he/she will be asked to revise the work in a stipulated period.

After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee.

SINGLE BLIND PEER REVIEW BY EXPERT PEER REVIEWERS

AMRJ adopts the Single Blind Peer Review Method. After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee for review through email. AMRJ do not disclose the details of researcher to Peer Review Committee. The Peer Review Table will be displayed online according to the criteria decided by the Editorial Board. After the approval by Peer Review Committee, the research work will be published in the Issue. In case if any instructions received from Peer Review Committee, the same will be forwarded to the researcher and he/she will be asked to clear the matter. Editorial Board of AMRJ will be the final authority to decide whether a research work is to be published or not.

AMRJ Disclaimer:

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III SJIF Impact- 5.67

Index

Sr. No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	Gender Neutral Laws on Sexual Offences: Need of the Nation	Dr. Amitesh Anand	05
2	A Study of Regulatory Framework of Indian Banking Sector	Dr. Premila Jain	12
3	Study Habits of higher Secondary School Students in Relation to Certain Variables	Kaushal Vyas Dr.Milan B. Shah	18
4	A Study of Gujarati Language Creativity of Secondary Schools Students in Context to Certain Variables	Hetal Pramodbhai Solanki	21
5	Peer-to-Peer Lending – A Booming Customer Centric Platform	Dr. M. Vijayalakshmi Mr. J. Muralidharan Dr. G Radhika	24
6	Reviewing the influence and use of mobile phone camera photography in today's life	Ajay Yadav Prof. (Dr.) B S Chauhan,	29
7	Kolakaluri Enoch's "The Village Well": Quenching The Thirst With Unflinching Resolute	Dande Surekha Prof. Kolakaluri Sumakiran	33
8	Indian Parliamentary Democracy: Seven Decades of Success	Dr.D.S.V.S. Balasubrahmanyam	37
9	Evolution of General and States Elections With Respect to National and Regional Parties in India	Mr. Sharang R. Mundhe	42
10	A Comparative Study of Professional Attitude of B.Ed. Students Studying in Government-Aided and Self-Financed Institutions	Dr. Shikha Banswal	47
11	Mr. George Knightley: A clairvoyant in Jane Austen's Emma.	Mr. Vaibhav Sunil Bhalerao	52
12	The Contribution of Rabindranath Tagore in Indian Poetry	Mr.Vinod Samadhan Gade	54
13	Feminism and Human Welfare in Alice Walker's novel,'The Color Purple'	Dr. Deepak S. Chaudhari	58
14	'तमस' उपन्यास में प्रतिबिम्बित संवेदनात्मक मूल्य	अनीश कुमार यादव / डॉ. चंदन कुमार	60
15	Partition Horror Remembrance Day की याद में 'मेरी माँ कहाँ' ?	प्रो. डॉ.मनु	64
16	गिरिजा भारती का 'अस्तित्व' उपन्यास में नारी के विविध रूप	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन / डी. श्रीदेवी	67
17	वर्तमान समय में समान नागरिक संहिता की प्रासांगिकता एक अध्ययन	डॉ.नीलम चैरे आकांक्षा गौतम	69
18	शैलेश मटियानी की कहानियों में लोकसंस्कृति का स्वरूप	डॉ.आशा हर्बोला / प्रिंयका बिष्ट	74
19	विनय मिश्र की ग़ज़लों में राजनीतिक चेतना	प्रो. रजनी शिखरे	77
20	समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण विमर्श	संतोष नागरे	79
21	सुषम बेदी के उपन्यासों में नारी जीवन	डॉ. संजय आर. पटेल	82
22	नारी का अस्तित्व मालती जोशी की दृष्टि में	डॉ. अनुराधा पाकलापाटि इ. जाक्कुलिन	86
23	भोजनगर की बसंतीदेवी- बालविधवा की करुण कहानी	करुणालक्ष्मी.के.एस.	90

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III
SJIF Impact- 5.67

22

नारी का अस्तित्व मालती जोशी की दृष्टि में

इ. जाक्कुलिन
शोधार्थी, हिंदी विभाग, (UP21G9651001),
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड
स्टडीज , पल्लावरम, चेन्नई

डॉ अनुराधा पाकलापाटि,
शोध निर्देशिका, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड
स्टडीज , पल्लावरम, चेन्नई

जब हम नारी के बारे में सोचते हैं तो सबसे पहले हमारे मन में प्रेम, सौंदर्य, ज्ञान और ऊर्जा से भरी एक छवि आती है। नारी दीपक के समान परिवार को रोशनी देती है। इसलिए उसे भी परिवार की मुखिया कहा जाता है। मनुष्य जीवन का सच्चा सौंदर्य भी इसी 'नारी' नाम में निहित है। नारी के बारे में प्रसाद जी की यह पंक्ति पूर्णतः साकार है-

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास – रजत – नग पग तल में।
पीयूष – स्रोति–सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में"[1]

इस दुःख भरे संसार में सुख की कलियाँ खिलनेवाली नारी ही है। नारी तो अपने नाम में ही कोमल है, इसलिए महाप्राण निराला ने कहा- "साहित्य के एक पृष्ठ में एक नारी मूर्ती, तम के अतल प्रदेश में मृणाल दंड की तरह अपने शत-शत दलों को संकुचित-संपुटित लेकर, बाहर आलोक के देश में अपनी परिपूर्णता के साथ खुल पड़ती है। जड़ों में प्राण संचित हो जाते हैं, अक्षय में भुवन मोहनी ज्योतिः स्वरूपा नारी"[2]। आज के समाज में महिलाओं का महत्व बढ़ रहा है। आज़ादी के पहले, महिलाओं को घर के अंदर बंद कर दिया जाता था और उन्हें कैदियों जैसा कोई अधिकार नहीं दिया जाता था। देश की आज़ादी के बाद राजाराम मोहन राय जैसे कई समाज सुधारक ने महिलाओं की आज़ादी के लिए संघर्ष किया। इसका फलःस्वरूप महिलाओं की ज़िंदगी में थोड़ी बहुत मिली। नारी मुक्ति के बाद नारी शिक्षा को महत्व दिया जाने लगा। तब से समाज ने महिलाओं की प्रगति को एक बेकाबू जंगल की आग की तरह देखा है।

नारी शब्द की उत्पत्ति

सृष्टि के आरंभकाल से नारी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भिन्न- भिन्न प्रकार के मत रहे हैं। प्राचीन शास्त्रों के अध्ययन के द्वारा मालुम हुआ है कि विश्व प्रजापति (ईश्वर) आरंभ में एकाकी थे। अतः उसने स्वयं को दो भाग में विभक्त कर लिया। एक भाग को पति एवं दूसरे भाग को पत्नी बना दिया । संस्कृत, हिंदी में 'नारी' शब्द का प्रयोग प्रयोगवाद में प्राप्त होता है, जिसका अर्थ यातिक (पत्नी) लिया गया है। नारी शब्द 'नृ' या 'नर' से बना है। अंग्रेज़ी भाषा में – "नारी के लिए woman शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह शब्द अंग्लो सेक्सन भाषा से आया है। वहाँ पर 'wif-man' का प्रयोग है, जिसका अर्थ है 'female person' अर्थात मादा व्यक्ति। कालांतर से 'f' वर्ण लुप्त होकर 'woman' शब्द प्रचलित हुआ"[3]।

नारी शब्द की परिभाषा

प्राणी जगत में 'नारी' शब्द 'नर' के समानंतर है। इसका प्रयोग स्त्रीलिंग वाची मादा प्राणियों के प्रतीक रूप में होता है। मैथिलीशरण गुप्त जी के शब्दों में- "एक नहीं दो-दो मात्राएँ, नर से बढ़कर नारी।"[4] कोमलता, दृढ़ता, स्पृहा आदि गुण नर की अपेक्षा नारी में विशेष रूप से पाये जाते हैं। यही नहीं, रूप-आकार, शरीर-संगठन आदि विविध स्थितियों में नारी विधाता की उच्चतम परिकल्पना सिद्ध हुई है। मीराबाई, सीता, सावित्री, महारानी लक्ष्मीबाई आदि नारियाँ इन्हीं आदर्शों की प्रमाण है।

नारी शब्द के विभिन्न अर्थ

शब्दों का अर्थ और विकास मानव संस्कृति का विकास होता है। सभ्यता, समाज एवं संस्कृति का विकास के साथ नारी शब्द रूप में भी भिन्नता प्रचलित रहे हैं। अमरकोश के अनुसार नारी के पर्यायवाची शब्द हैं – "स्त्री, योषित, अबला, योषा, जोषा, वधू, सीमांतिनी, प्रतीपदर्शिनी, वामा, वनिता, महिला, कांता, ललना, नितंबिनी, सुन्दरी, रमणी, रमा, कोपना, भामिनी, चण्डी, वरारोहा, मतकाशिनी, वरवर्णिनी, कृताभिषेका, महिषी, भोगिनी, पत्नी, सहधर्मिणी, भार्या, कुटुंबिनी, फरंध्र, अध्यूढा, अधिविन्ना, स्वयंवरा, पतिव्रता, कुलपालिका आदि"[5]।

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III SJIF Impact- 5.67

मालती जोशी की कहानियों में चित्रित नारी

मालती जोशी ने साहित्य की विविध विधाओं में अपना सृजनात्मक चमत्कार दिखाया है। बालसाहित्य, कहानी, उपन्यास, गीत, कविता, अनेक ललित निबन्ध आदि विधाओं में से कहानी मालती जोशी जी की प्रमुखतम विधा रही है। उनके साहित्य का प्रमुख लक्ष्य नारी की समस्याओं का अंकन कर उसके पुरुषों के बराबर स्थान देना रहा है। मालती जी ने नारी की वेदना को एक नारी की दृष्टि से देखने-परखने का प्रयास किया है। वे एक नारी होने के कारण सम्पूर्ण नारियों के प्रति उनके मन में पूरी निष्ठा है।

मालती जी का समकालीन महिला कथाकारों में विशेष स्थान है। उनका यह विशिष्ट स्थान उनकी लेखन शैली के कारण ही मिला है, क्योंकि उन्होंने अपने लेखन में नारी मन की टूटन-घुटन, अकेलापन और आक्रोश तथा अपनी स्वयं की निर्णय क्षमता को अपनी कहानियों में व्यक्त किया है। उनकी भाषा सीधी, सरल एवं सामान्य पाठक के मन को छू लेती है। इसलिए उनकी कहानियाँ सभी वर्ग के पाठकों द्वारा पसंद की गयी हैं। उन्होंने अधिकतर मध्यवर्गीय नारी मन की घुटन को उजागर किया है। मध्यवर्गीय नारी की घर व बाहर की छटपटाहट पारिवारिक समस्या एवं उसे कितने मानसिक तनावों से गुजरना पड़ता है, इसका चित्रण उनकी कहानियों में मिला है।

स्वयं मालती जोशी के शब्दों में- "भारतीय नारी हमेशा ही लेखकों का प्रिय विषय रहा है। मध्य युग की नारी का इतिहास शोषण-अनाचार और अत्याचार का इतिहास है । पुरुष की पाशविक बर्बरता की कहानी है। आधुनिक काल में चित्र कुछ बदला तो है। शिक्षा के प्रसार ने इतना तो किया है कि नारी को अपने प्रति होने वाले अन्याय की चेतावनी दी है। अपनी पीड़ा को मुखर करने की क्षमता दी है, परन्तु आज भी औरत दर्द और आँसुओं की तस्वीर है। नई चेतना ने उसके मानसिक क्षितिज को विस्तार तो दिया है, पर उसके पैर अब भी रसोई की चौखट में कैद हैं। उसकी आकांक्षाओं को पंख तो मिल गए हैं, परन्तु परिवार की लक्ष्मण रेखा अब भी उसका मार्ग अवरुद्ध किए हुए है। मजबूरी में ही सही, हमने बेटी की, बहू की कमाई खाना शुरू किया था। पर अब तो उसका स्वाद ऐसा लग गया है कि हम अपने स्वार्थ के आगे उसकी सुख-सुविधा, आशा आकांक्षाओं को भी भूल गए हैं। वह हमारे लिए पैसा कमाने वाली मशीन-भर बनकर रह गई है। उसकी कमाई पर हमारा हक है। पर उसके अधिकारों को लेकर हम अब भी मध्ययुग की नीतियाँ अपना रहे हैं। मैंने समाज में व्याप्त इन्हीं विसंगतियों को अपनी कहानियों में पिरोने का प्रयत्न किया है"[6]।

कामकाजी नारी

एक कामकाजी नारी को अपने कार्यरथ जीवन तथा माँ के रूप में दोहरी भूमिकाओं के संघर्ष का सामना करना पड़ता है। एक ओर अपने कार्यालय का कार्यभार और दूसरी ओर माँ के रूप में बच्चों की देखभाल करना। इस तरह एक कामकाजी नारी अपने कार्य के साथ-साथ परिवार को भी देखभाल करती है तो भी संघर्ष उत्पन्न होता है। मालती जोशी जी की कहानियों में भी हमें इसका प्रसंग मिलता है। उनकी कहानी 'मध्यान्तर' में कामकाजी नारी की त्रासदी पर उनकी अलग दृष्टिकोण देख सकते हैं। सगाई होने के बाद नौकरी छोड़ने की बात जब कहानी की नायिका विमल ने की तब चाचा जी ने कहा था आजकल सरकारी नौकरी किसे मिलती है। घर पर तीन-तीन बहनें ब्याहने बैठी हैं। अतः वे नौकरी छुड़वायेंगे नहीं। उसकी अभी तक की जिन्दगी दूसरों की ही गृहस्थी का बोझ ढोते रहने में गुजर रही थी। उसके पति ने उस पर आरोप लगाया कि आम औरतों जैसी उसमें भी ईर्ष्या है। तब उसने चीखकर कहा – "औरत कहलावने को कुछ बाकी भी रहने दिया है तुमने। सब तो निचोड़ लिया है। पैसे कमाने की मशीन भर रह गई हूँ मैं। इसीलिए तो मेरा रोना-कल्पना भी सबकी आँखों में आता है। मशीन हूँ न, रोने का हक थोड़े ही है मुझे।[7]"

माँ-बाप की जायदाद पर हक जतानेवाली नारी

वर्तमान भारत में माँ-बाप की जायदाद पर लड़कों के समान लड़कियों के लिए भी समान अधिकार हैं। इसका प्रसंग मालती जोशी जी की कहानी 'बेघर' में मिला। कहानी की नायिका सीमा के माँ-बाप की जायदाद पर जमाई अपना हक जताते हैं परंतु उसके माँ-बाप के बुढ़ापे में सहारा नहीं बनते। यदि कोई नारी ऐसा करना चाहती है तो तब उन्हें उसके भाई का याद आते हैं। नारी का यदि जायदाद पर हक है तो माँ-बाप को संभालने का भी फर्ज़ है। मालती जोशी जी का कहानी-संग्रह "पिया पीर न जानी" से "बेघर" कहानी में इसी ओर उल्लेख करती है। कहानी की नायिका सीमा ने सब के सामने अपनी राय रखकर उसने कहा कि " मुझे ज़मीन में हिस्सा नहीं चाहिए। मुझे तो यह घर और घर से लगा छोटा-सा बगीचा दे दीजिए। वह भी जब तक बाबूजी हैं, बाबूजी के नाम ही रहेगा। क्यों कि मुझे मालुम है कि बाबूजी मेरे मकान में रहना कभी गवारा नहीं करेंगे।[8]"

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III SJIF Impact- 5.67

सहधर्मिणी

एक सहधर्मिणी वो है जो पति से बात करते समय उसकी अच्छी दोस्त बन जाए, जो पति को खाना खिलते समय उसकी माँ बन जाए, दु:खों में उसकी संगिनी बन जाए और पति के साथ समय बिताते वक्त अप्सरा बन जाए वह सहधर्मिणी कहलाती है। इसका उल्लेख मालती जोशी जी का कहानी संग्रह "औरत एक रात है" की कहानी 'स्मृति कल्प' में भी मिलता है। इस कहानी की नायिका शोभा दीदी है। उसकी शादी के कुछ दिन के बाद में पता चलता है कि लड़का तो रोग की पुड़िया है। शोभा ने कहा कि "पति चाहे लंगड़ा, लूला, काना, कूबड़ा हो, तब भी हिन्दुस्थानी पत्नी उसकी दीर्घायु कामना करती है। मनौतियाँ मानती है, क्यों ? क्योंकि उसे मालूम है कि पति के बिना उसका अस्तित्व शून्य है। घर-परिवार में उसका मान-सम्मान, समाज में उसकी प्रतिष्ठा सब पति के दम से होती है।[9]" परंतु वर्तमान समय में ऐसा नहीं है। वर्तमान शिक्षा और सामाजिक चेतना ने स्त्रियों को इतना जगरूक बनाया है कि वे अपने अधिकारों के प्रति समवेत रहना और उन्हीं के अनुरूप व्यवहारों को महत्व देने में समर्थ हो गई हैं। अब वह पति की दासी नहीं अपितु साथी के रूप में जीवन जी रही हैं।

शिक्षित नारी

किसी भी देश और परिवार पूर्ण रूप से विकसित होने के लिए वहां की नारी शिक्षित होना आवश्यक है। देश और परिवार को आर्थिक रूप से तथा सामाजिक रूप से विकसित बनाने में नारी शिक्षा बहुत बड़ा मुद्दा है। आज वे सामाजिक जीवन से जुड़ी प्रायः सभी गतिविधियों में भाग लेती हैं। इस परिस्थिति की उल्लेख मालती जोशी जी की कहानी 'आखिरी शर्त' में देख सकते हैं। मम्मी-पापा कहने के बाद भी कुछ परिवर्तन नहीं हुआ। उस समय माँ-बाप कहा करते थे कि लड़की को बी.ए. पढ़ाने पर एम.ए. लड़का कहाँ से लायेंगे। कुसुम ने जब जाना कि दीदी मधु ब्याह करने जा रही हैं तब उसने उसे टोका कहा कि लड़की प्रिलिम की परीक्षा दे रही है। हो सकता है आई.ए.एस. में निकल जाए। उसकी ब्याह अभी करने में क्या तुक है। वह स्कॉलर है। उसे अपना कैरियर बनाने दो। अपने परिवार में कोई तो कलेक्टर बने। तब आधुनिक युग की माँ ने भी वही कहा जो पुराने जमाने की माँ ने कहा था- "उस कलक्टरानी के लिए हम कमिश्नर दूल्हा कहाँ से लाएँगे यह भी सोचा है।"[10] हालांकि इन परिवर्तनों ने परिवार में कुछ संघर्ष की दशाओं को भी जन्म दिया है।

परिवार के उत्तरदायित्व में नारी का भूमिका

परिवार के संचालन और विकास में नारी की विशिष्ट उत्तरदायित्व होती है। वह परिवार के लिए महत्वपूर्ण पक्ष भी है। पहले वह अपने माँ-बाप के घर में कन्या के रूप में रह कर शील व सदाचार पालन करके माँ-बाप को अच्छे नाम कमाना उसके प्रमुख उत्तरदायित्व है। विवाह होने के बाद पत्नी व वधू का रूप धारण लेकर ससुराल में हमेशा सहयोगी और सहगामिनी बनकर अपना कर्तव्य निभाती है। उसके तत्पश्चात माँ का रूप लेकर संतानों का भरण-पोषण करके खद अपने बच्चों को आचार-विचार, शील, गुण-दोष आदि की शिक्षण देती है। अंत में नानी-दादी के रूप में रह कर अपने पोता-पोती के सजीव आदरणीय पात्र में अच्छे राह दिखाते हैं। इसका संदर्भ मालदी जोशी का कहानी-संग्रह "रहिमन धागा प्रेम का" से "प्रलय के बावजूद" कहानी में मिलता है। इस कहानी में कहानी की नायिका आभा और उसके पति आलोक दोनों विवाह होने के बाद विदेश गये तो यहाँ दोनों के माँ-बाप अकेले रहना पड़ा। आभा और आलोक दोनों घर के रिशते में बहुत घनिष्ठ-संबंध होता है। एक दिन आभा के माँ-बाप की सालगिरह के लिए शुभकामनाएं देने को आलोक की माँ उनके घर जाते वक्त मालुम हुआ है कि आभा और आलोक दोनों विदेश में अलगाव करके रहते हैं। यह विषय दोनों परिवारवालों से असहनीय है। इस समय में आलोक की माँ अपने पूरे दौलत को आभा के पुत्रों के नाम पर देने को निर्णय कर लिया तो आभा के पिता जी ने उन्हें रोक दिया तो उन्होंने कहा कि "नहीं, मैं अपने होशोहवास में हूँ। आज की शाम मैं वाकई उन खुशकिसमत बच्चों के नाम पर करना चाहता हूँ, जो जन्म लेने की जहमत से बच गए। हम चाहें तो एक-दूसरे को इसके लिए बधाई भी दे सकते हैं"[11]

मालती जोशी की दृष्टि में नारी

मालती जोशी जी सबको सम्मान देनेवाली उत्तम लेखिका हैं। उनकी कई कहानियों की नायिकाएं अच्छी पढ़ी-लिखी, कामकाजी नारी हैं। वे घर की सारी बोझ उठाकर साथ-साथ घर के विकास कार्य में भी खयाल रखती हैं। वे खुद कई कठिनाइयों के बावजूद जीवन यात्रा में घर को खुश रखती हैं और अपने सारे कर्तव्य निभाती हैं। इस संदर्भ का उल्लेख मालती जोशी जी की कहानी संग्रह "एक घर हो सपनों का" में कहानी से "मैंने चाँद-तारे तो नहीं माँगे थे" मिलता है। कहानी की नायिका निधि आईआईटी में पढ़ाई होने के बाद सहपाठी समीर को प्यार करके विवाह कर लिया। नायिका निधि एक कंपनी में काम कर रही थी। उसकी वैवाहिक जीवन कुछ दिन बहुत संतुष्ट रहा तो कुछ दिन बाद गर्भ होने के कारण काम छोड़ने का निर्णय कर लिया। पर

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
July-September 2023 Volume 04 Issue III SJIF Impact- 5.67

घर की जरूरतों के कारण उसके पति और घरवाले काम छोड़ने को मना कर दिये और निधि की गर्भपात करने के लिए भी सलाह दिये। निधि ने कहा "फिकर नॉट यार। रुचि की शादी हो जाने दो, शिशिर की पढ़ाई हो जाने दो। मैं तो कहती हूँ उसकी भी शादी हो जाने दो। तब हम बच्चे के बारे में सोचेंगे। नो हरी। अभी बहुत जिंदगी पड़ी है। ओ के!"[12] निधि अपनी घर का सुख के लिए अपनी सब कुछ न्योछावर कर देती है।

इक्कीसवीं सदी की नारी

इक्कीसवीं सदी में, नारी का कदम घर से बाहर चला गया है। भारतीय नारी चार दीवारों से बाहर निकलकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई है। वह शिक्षित होकर विभिन्न क्षेत्रों में अच्छा कार्य कर रही है। साहित्य, चिकित्सा, विज्ञान, सेना आदि जैसे कई क्षेत्र हैं, जिसमें नारी ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। देश की प्रगति में पुरुषों के साथ-साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपनी भूमिका निभा रही है। पुरुष की तरह समान अधिकार स्त्री के लिए भी दिया गया है। पुरुष से अधिक कमाते है। अपने देखभाल खुद करते हैं। उनको विवाह में भी उतनी रुची नहीं है।

निष्कर्ष

मालती जोशी जी ने अपने कहानी साहित्य में नारी जीवन का आंतरिक एवं बाह्य जगत का चित्रण किया है। विधवा, बाँझ, कलंकिता, दहेज पीड़िता, तलाकशुदा, अविवाहित प्रौढ़ा, अकर्मण्य पुरुष की पत्नी, अपाहिज पुरुष की पत्नी, पति से तिरस्कृत नारी आदि पत्नियों के विभिन्न रूपों को उजागर किया है। पत्नी के अतिरिक्त प्रेयसी, माँ, बेटी, बड़ी दीदी, छोटी बहन, विमाता, भाभी, बुआ, चाची, मौसी आदि विभिन्न रूपों को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। समझौतावादी, रूढ़िग्रस्त व्यक्तित्वहीन नारियों की अपेक्षा महत्वाकांक्षी, विद्रोही, संघर्षशील अस्मिता के प्रति सचेत नारियों का भी चित्रण किया है। लेखिका ने 'मोरी रंग दी चुनरिया' कहानी संग्रह में विधवा नारियों के विविध पहलुओं की कहानियों को प्रस्तुत किया है, संदर्भों की मौलिकता एवं घटनाओं की विभिन्नता आदि के कारण उनकी कथाओं की रोचकता में कोई बाधा नहीं आयी है।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, पृ.स.-84
2. निराला, प्रबन्ध पद्य ('रूप और नारी' शीर्षक लेख), पृ.स.-73
3. डॉ. मंगला कप्पीकेरे, साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं में चित्रित नारी, पृ.स.-20
4. श्री मैथिलीशरण गुप्त, व्यापार, पृ.स.-31
5. अमरकोश, द्वितीय खंड,मनुष्य वर्ग
6. मालती जोशी, बोल री कठपुतली, पृष्ठ-भूमिका
7. मालती जोशी, मध्यांतर, पृ.स.-10
8. मालती जोशी, पिया पीर न जानी, बेघर, पृ.स.- 109
9. मालती जोशी, औरत एक रात है, स्मृति कल्प, पृ.स.-84
10. मालती जोशी, आखिरी शर्त, पृ.स.-10
11. मालती जोशी, रहिमन धागा प्रेम का, प्रलय के बावजूद, पृ.स.-48
12. मालती जोशी, एक घर हो सपनों का, मैंने चाँद-तारे तो नहीं माँगे थे, पृ.स- 10